Self Respect

30-06-2014

✓ओम् शान्ति का अर्थ तो बच्चों को समझाया है । बाप भी बोलते हैं, तो बच्चे भी बोलते हैं ओम् शान्ति क्योंकि आत्मा का स्वधर्म है शान्त । तुम अब जान गये हो कि हम शान्तिधाम से यहाँ आते हैं पहले-पहले सुखधाम में, फिर 84 पुनर्जन्म लेते-लेते दु:खधाम में आते हैं । यह तो याद है ना । बच्चे 84 जन्म लेते, जीव आत्मा बनते हैं । बाप जीव आत्मा नहीं बनते हैं ।

✓बाप की महिमा और दैवीगुणों वाले मनुष्यों की महिमा में फर्क है । तुम दैवीगुण धारण कर यह देवता बनते हो । पहले आसुरी गुण थे । असुर से देवता बनाना, यह तो बाप का ही काम है । एम- ऑबजेक्ट भी तुम्हारे सामने है । जरूर ऐसे श्रेष्ठ कर्म किये होंगे ।

✓ बाप ही दुःख से निकाल सुखधाम में ले जाते हैं । वहाँ दुःख का नाम-निशान नहीं । बहुत सहज बात कहते हैं- अपने शान्तिधाम को याद करो, जो बाप का घर वह तुम्हारा घर है और नई दुनिया को याद करो, वह तुम्हारी राजधानी है । बाप तुम बच्चों की कितनी निष्काम सेवा करते हैं । तुम बच्चों को सुखी कर फिर वानप्रस्थ, परमधाम में बैठ जाते हैं । तुम भी परमधाम के वासी हो । उसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ भी कहा जाता है । बाप आते हैं बच्चों की खिदमत करने अर्थात् वर्सा देने ।

✓बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों को पार्ट बजाना ही है । यह पार्ट तुमको अनादि, अविनाशी मिला हुआ है । तुम कितना वारी सुख-दु:ख के खेल में आये हो । कितना बार तुम विश्व के मालिक बने हो । बाप कितना ऊंच बनाते हैं । परमात्मा जो सुप्रीम सोल है, वह भी इतना छोटा है । वह बाप ज्ञान का सागर है । तो आत्माओं को भी आपसमान बनाते हैं । तुम प्रेम के सागर, सुख के सागर बनते हो । देवताओं का आपस में कितना प्रेम है । कभी झगड़ा नहीं होता । तो बाप आकर तुम्हें आपसमान बनाते हैं ।

✓84 जन्म तुम लेते हो । गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे..... । बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, पहले-पहले विश्व में पार्ट बजाने तुम आये हो । मैं तो थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ । यह तो पुरानी जुत्ती है ।

✓ब्रह्मा द्वारा स्थापना । ब्रह्मा द्वारा अर्थात् ब्राह्मणों द्वारा । पहले चोटी ब्राह्मण, फिर क्षत्रिय तो .....बाजोली खेलते हो ।

✓बाप भी कहते हैं, मैं मकान का किराया देता हूँ । बेहद का बाप है, कुछ तो किराया देते होंगे ना । यह तख्त लेते हैं, तुमको समझाने लिए । ऐसा समझाते हैं जो तुम भी विश्व के तख्तनशीन बन जाते हो । खुद कहते हैं, मैं नहीं बनता हूँ ।

- ✓शिवबाबा की याद में ही सोमनाथ का मन्दिर बनाया है । बाप कहते हैं इससे मुझे क्या टेस्ट आयेगी । जड़ पुतला रख देते हैं । मजा तो तुम बच्चों को स्वर्ग में है । मैं तो स्वर्ग में आता ही नहीं हूँ ।
- ✓दैवी गुण वाले को देवता कहा जाता है । यह ऊँच देवता धर्म वाले प्रवृत्ति मार्ग के थे । उस समय तुम्हारा ही प्रवृत्ति मार्ग रहता है । बाप ने तुमको डबल ताजधारी बनाया । रावण ने फिर दोनों ही ताज उतार दिये । अब तो नो ताज, न पवित्रता का ताज, न धन का ताज, दोनों रावण ने उतार दिये हैं । फिर बाप आकर तुमको दोनों ताज देते हैं- इस याद और पढ़ाई से इसलिए गाते हैं - ओ गॉड फादर हमारा गाइड बनो, लिबरेट भी करो । तब तुम्हारा नाम भी पण्डा रखा हुआ है ।

✓अभी बाप द्वारा तुम बच्चों को माइट मिलती है । सारे विश्व के तुम मालिक बनते हो । सारा आसमान, धरती तुमको मिल जाती है । कोई की ताकत नहीं जो तुमसे छीन सके, पौना कल्प । उन्हों की तो जब वृद्धि होकर करोड़ो की अन्दाज में हो तब लश्कर ले आकर तुमको जीते । बाप बच्चों को कितना सुख देते हैं । उनका गायन ही है दुःख-हर्ता, सुखकर्ता । इस समय बाप तुमको कर्म- अकर्म- विकर्म की गति बैठ समझाते हैं । रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं । सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं । अभी तुमको एक सतगुरू मिला है, जिसको पतियों का पति कहते हैं क्योंकि वह पति लोग भी सब उसको याद करते हैं ।

- ✓अभी तुम संगम पर बैठे हो, तुम्हारी माया के साथ युद्ध है । वह छोडती नहीं है । बच्चे कहते हैं-बाबा, माया का थप्पड़ लग गया । बाबा कहते हैं-बच्चे, की कमाई चट कर दी! तुम्हें भगवान पढ़ाते हैं तो अच्छी रीति पढ़ना चाहिए । ऐसी पढ़ाई तो फिर 5 हजार वर्ष बाद मिलेगी ।
- ✓हम सभी आत्माओं की बहुत समय से यह आश थी कि जीवन में सदा सुख शान्ति मिले, अब बहुत जन्म की आशा कब तो पूर्ण होगी । अब यह है हमारा अन्तिम जन्म, उस अन्त के जन्म की भी अन्त है ।
- ✓इस सर्वशक्तिवान बाबा को चलते फिरते श्वासों श्वास याद करो । अब यह उपाय बताने की सहायता खुद परमात्मा आकर करता है, परन्तु इसमें पुरुषार्थ तो हर एक आत्मा को करना है । परमात्मा तो बाप, टीचर, गुरु रूप में आए हमें वर्सा देते है ।

- ✓यही टाइम है पुराना खाता खत्म कर नई जीवन बनाने का, इसी समय जितना पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को पवित्र बनायेंगे उतना ही शुद्ध रिकार्ड भरेंगे फिर सारा कल्प चलेगा, तो सारे कल्प का मदार इस समय की कमाई पर है । देखो, इस समय ही तुम्हें आदि-मध्य- अन्त का ज्ञान मिलता है, हमको सो देवता बनना है और अपनी चढ़ती कला है फिर वहाँ जाके प्रालब्ध भोगेंगे ।
- ✓वरदान:- दिल और दिमाग दोनों के बैलेंस से सेवा करने वाले सदा सफलतामूर्त भव
- ✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।